



Original Article

सुषमा अग्रवाल के ' मन के जीते जीत ' उपन्यास में चित्रित शैक्षिक समस्याएं एवं समाधान

प्रा. महेश गोविंद पाटील

सहायक अध्यापक

श्रीमती कुसुमताई राजारामबापू पाटील कन्या महाविद्यालय, इस्लामपूर, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

Manuscript ID:

IJAAR-C130318

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 84 - 88

Submitted: 18 Jan.2026

Revised: 25 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. महेश गोविंद पाटील

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785500

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785500>



Creative Commons



सार:

सुषमा अग्रवाल के ' मन के जीते जीत ' उपन्यास की नायिका स्वाती पोलिओ ग्रस्त होने के कारण अपाहिज है। जो अपाहिज लड़कियों का प्रतिनिधित्व करती है। तो उसकी सहेली खुशबू सामान्य लड़कियों का प्रतिनिधित्व करती है। स्वाती अपाहिज होने के कारण कारकीय कौशल को शिक्षा लेते समय उसे समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वह विकलांग होने के कारण नृत्य नहीं कर सकती है। खेल कूद नहीं सकती। खेलों में प्रतिभागी नहीं बन सकती। जिसकी चुभन उसे हमेशा सताती है। पारिवारिक स्थिति या माहोल शिक्षा के योग्य हो तो ही पढ़ाई हो पाती है। घर में मौजूद छोटे बच्चे हो या फिर घर में बिमार पड़ा कोई व्यक्ति पढ़ाई में बाधा बनता है। आर्थिक स्थितियाँ भी शिक्षा पर अपना पूरा असर डालती है। बुद्धिमत्ता की कमी हो या फिर शारीरिक व्यंग्य की समस्या खुशबू और स्वाती के मन में हीनभावना, चिंता, आत्मग्लानी निर्माण कर ताणतणाव बढ़ा ही देती है। लिहाजा इससे स्पष्ट है कि शारीरिक कमजोरी, पारिवारिक माहोल मानसिक चिंता, बिघड़ी आर्थिक परिस्थिति शिक्षा में समस्या बनकर उभरती है। लेकिन यथायोग्य विचार, निर्णय और कर्मपथ का स्वीकार कर उसका समाधान भी प्राप्त करना संभव है। सीमा अग्रवाल जी ने अपने उपन्यास में प्रस्तुत किया है, यह कहना तर्कसंगत होगा।

मुख्य शब्द: सुषमा अग्रवाल, मन के जीते जीत, उपन्यास, शैक्षिक, समस्याएं, समाधान, शारीरिक कमजोरी, पारिवारिक स्थिति, मानसिक ताण-तणाव, चिंता, आर्थिक स्थिति

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. महेश गोविंद पाटील. (2026). सुषमा अग्रवाल के ' मन के जीते जीत ' उपन्यास में चित्रित शैक्षिक समस्याएं एवं समाधान. International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 84 - 88. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785500>

प्रस्तावना:

मनुष्य बुद्धिशील और सृजनशील प्राणी है। ईश्वर प्रदत्त बुद्धिमत्ता के सहारे अपने जिज्ञासा और कुतूहल के चलते उसने अनेक अज्ञात विषयों को ज्ञात कर अपने विकास के लिए ज्ञान का भंडार खड़ा किया। इस ज्ञान को उसने मौखिक लिखित,

सांख्यिक रूप में पिढी-दर-पिढी आगे बढ़ाया। ऐसा समय करते उसे कालानुरूप अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा है इसमें कोई संदेह नहीं है।



इतिहास इसका गवा है कि ज्ञान के सहारे अपना विकास हो सकता है। यह बात इन्सान समझ गया। जब से उसने नश्वर ज्ञान को अक्षय बनाने का प्रयास शुरू किया जिसमें से पिढी-दर-पिढी मौखिक पठन के माध्यम से शिक्षा दे कर ज्ञान को दुसरोँ तक पहुंचाया किंतु इसमें भी ज्ञान में बदलाव होने की आशंका बनी रही लिहाजा समस्याओं का सामना करते हुए गुरुकुलों के माध्यम से मौखिकी पठन के साथ लेखन के द्वारा ज्ञान क्षेत्र को मजबूत बनाया गया।

ऐसी स्थिति में ज्ञान प्राप्त करने का साधने शिक्षा बन गया। कालानुरूप शिक्षा के माध्यम तथा नियम बदलते गए। भाषा भिन्नता, वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, धर्म, सामाजिक व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था इनके परिणाम स्वरूप हर काल की शिक्षा व्यवस्था की समस्याएं बदलती रही है। इसमें कोई संदेह नहीं।

वर्ण व्यवस्था के परिणामस्वरूप महिलाओं तथा वैश्य और शूद्रों को शिक्षा से वंचित रहना पड़ा। राजनीतिक व्यवस्था या परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप शिक्षा का उद्देश्य बदलता रहा है। आर्थिक विपदा से ग्रसित समाज हर काल में शिक्षा से वंचित रहता आया है। भाषा भी शिक्षा में एक समस्या के रूप में हर काल में अपना लोहा मनवाती आई है। लिहाजा 21 वीं सदी में इसमें कुछ बदलाव हुआ है या वैसी ही परिस्थितियाँ आज भी बनी हुई है, यह हम सुषमा अग्रवाल के 'मन के जीते जीत' है, इस उपन्यास में चित्रित शैक्षिक समस्याओं के माध्यम से हम वर्तमान कालीन शैक्षिक समस्याओं एवं समाधान पर विवेचन करेंगे क्योंकि साहित्य समान का दर्पण होता है।

शोध के उद्देशः

- 1) 'मन के जीते जीत' उपन्यास में चित्रित शैक्षिक समस्याओं और समाधान की जांच पड़ताल करना।
- 2) 'मन के जीते जीत' उपन्यास में चित्रित शिक्षा पर आर्थिक परिस्थिति से निर्माण होती समस्याएं एवं समाधान की खोजबीन करना।
- 3) शारीरिक कमियों से शिक्षा लेने में आती समस्याएं एवं समाधान की खोजबीन करना।
- 4) मानसिक तान-तनाव से शिक्षा में उत्पन्न होती समस्याएं एवं समाधान की जांच करना।
- 5) पारिवारिक स्थिति से शिक्षा में उत्पन्न होती समस्याएं एवं समाधान की जांच करना।

विषय विवेचनः

'मन के जीते जीत' उपन्यास में चित्रित शैक्षिक समस्याओं और समाधानः

सुषमा अग्रवाल का 'मन के जीते जीत' उपन्यास 21 वीं सदी के दुसरे दशक में प्रकाशित उपन्यास की नायिका स्वाती है। जो बाए हात के साथ बाए पैर से भी पोलियो ग्रस्त है। जो अपाहिज होने साथ ही लडकी भी है। उसकी प्रिय सहेली खुशबू है। इन दोनों के इर्द-गिर्द ही उपन्यास का संपूर्ण कथानक शुरुआत से लेकर अंत तक चलता है। जिसमें लडकियों के शैक्षिक जीवन में आती समस्याओं को रखकर उसका समाधान भी प्रस्तुत करने का सफल प्रयास सुषमा अग्रवाल जी ने अपने उपन्यास 'मन के जीते जीत' में किया है। इसमें कोई दो राय नहीं है। इस निष्कर्ष को हम निम्नलिखित विवेचन के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे।

- 1) शिक्षा में शारीरिक कमजोरी एक समस्या एवं समाधानः शारीरिक कमजोरी या व्यंग्यत्व हर इन्सान में



हीनभावना का संचार करती रहती है। जिसके चलते उस मनुष्य के विकास में बाधा उत्पन्न हो जाती है। उस इन्सान को समस्याएँ घेर लेती है। इसका परिणाम शिक्षा, व्यवसाय, नौकरी, वर्तन, व्यक्तित्व पर प्रभाव डालता है। सुषमा अग्रवाल के 'मन के जीते जीत' उपन्यास की नायिका स्वाती भी पोलिओग्रस्त है। भगवान कुछ छिन लेता है तो कुछ दूसरा ज्यादा देता है। जिसके चलते भगवान ने स्वाती को अत्यधिक बुद्धिमत्ता देकर उसको होशियार बनाया है। साथ ही वह दिखने में सुंदर है। अच्छा हस्ताक्षर निकालती है लेकिन वह नृत्य नहीं कर सकती। टी.व्ही. के सामने नृत्य करते शुभम को देख स्वाती भी नृत्य करना चाहती थी मगर पोलियोग्रस्त होने के कारण उसे ठिक से खड़े रह पाना भी संभव नहीं है, तो नृत्य कहा से करेगी। स्वाती के मन में शारीरिक कमी के कारण नृत्य करने के कौशल को लेकर जो समस्या सामने आती है, वह स्वाती के मन में उठे निम्न विचारों से स्पष्ट दृष्टव्य है - "आज न जाने क्यों उसे अपने पोलियोग्रस्त होने पर बहुत दुख हो रहा था काश! उसके हाथ-पैर सही होते तो वह भी नृत्य कर सकती थी। भगवान ने उसके साथ ऐसा क्यों किया? ऐसा कौनसा अपराध किया था जिसके कारण उसे ऐसी सजा मिली।"।

उक्त कथन में जिस प्रकार स्वाती के मन में पोलियोग्रस्त होने के कारण नृत्य न कर सकने की हीनभावना का विकास हुआ है। जो उसके शारीरिक विकास में बाधक बना है। जिससे उसके मन में अपराध बोध निर्माण हुआ है। वर्तमान समाज में भी ऐसे दिव्यांग तथा असामान्य बच्चों के मन में यही हीनभावना तथा अपराध बोध शिक्षा में तथा शारीरिक विकास में रोड़ा बनता दिखाई देता है।

ऐसी स्थिति में ऐसे बच्चों के माता-पिता का यही कर्तव्य होता है कि अपने बच्चों को प्रेरित कर उसे आत्मबल दे, विश्वास दे इससे बच्चे खुद पर विश्वास रख जो उनके पास है,

उससे अपने आप को और बेहतर तथा समृद्ध बनाने की कोशिश करते रहे। स्वाती की माँ संगीता अपने बेटी के अंदर निर्माण हुई हीनभावना को मिटाने के लिए उसे उचित मार्गदर्शन करती है। जो उक्त कथन से द्रष्टव्य है- "बेटी! किसी एक कमी के कारण मन में हीनभावना लाना उचित नहीं। भगवान ने हर किसी को सब-कुछ तो नहीं दिया। जो कुछ ईश्वर ने दिया है उसे सहर्ष स्वीकार करो। अपने अंदर जो योग्यता है, उसके आधार पर स्वयं को सँवारो। अपनी इस योग्यता को इतना निखारो कि स्वयं एक प्रकाशस्तंभ बन जाओ। योग्यता के आधार पर स्वयं को इतना ऊँचा उठाओ कि लोग तुम्हारी मिसाल दें।"।

2) शिक्षा पर पारिवारिक स्थिति या माहोल का परिणाम एवं समाधान: जिस घर में छोटे बच्चे हो वहा हमेशा पढ़ाई करनेवालों के लिए बच्चे समस्या पैदा करते रहते हैं। छोटा बच्चा अपनी बात मनवाने के लिए घर का कोई भी सदस्य काम में व्यस्त हो या फिर शिक्षा में उसके काम को या फिर पढ़ाई को रोकने का काम वह करता रहता है। सुषमा अग्रवाल के 'मन के जीते जीत' उपन्यास में उपन्यास की नायिका स्वाती के पढ़ाई के दौरान उसका भाई शुभम खेलने के लिए कोई उसके साथ कोई नहीं है इसलिए स्वाती को परेशान कर पढ़ाई करने नहीं दे रहा है। इसलिए स्वाती उसके साथ खेलने का वचन देती है, तभी शुभम उसके साथ पढ़ाई करने के लिए तैयार होता है। जो स्वाती द्वारा शुभम को कहे कथन से स्पष्ट नजर आता है - "हाँ, बाबा हाँ... मैं तेरे साथ खेलूँगी, परंतु पहले मुझे पढ़ने तो दो। जब मेरा काम पूरा हो जाएगा, मैं तभी खेलूँगी।"

निम्न कथन से स्पष्ट है कि परिवार में अगर छोटे बच्चे हो तो वह पढ़ाई करने वाले की पढ़ाई में बाधा पैदा करते हैं। यही स्थिति वर्तमान में भी हर घर में शिक्षा प्राप्त करनेवाले बच्चों के पढ़ाई करते समय समस्या के रूप में सामने आती है। लिहाजा अग्रवाल जीने बच्चों के मन के हीसाब से अगर हम



चलने का वचन देते हैं तो बच्चे भी हमारी बात सुनते हैं यह स्पष्ट रूप से सामने रखने का प्रयास किया है।

3) शिक्षा पर मानसिक ताण-तणाव तथा चिंता का परिणाम एवं समाधान: सुषमा अग्रवाल के 'मन के जीते जीत' उपन्यास की नायिका स्वाती बाए हात और पैर से पोलियो से ग्रस्त है। जिसकी चिंता उसकी माँ संगीता और पिता सुधीर को सताती रहती है। दोनों के मन में उसके शिक्षा को लेकर चिंता है। स्वाती की माँ सोचती है कि स्वस्थ बच्चा हो तो भी उसके माता-पिता उसके भविष्य को लेकर चिंता करते रहते हैं। उसके शिक्षा को लेकर चिंता करते हैं। तो उसकी बेटी तो पोलियो ग्रस्त है लिहाजा उसको भी चिंता हो रही है। स्वाती को लेकर उठी चिंता संगीता को ईश्वर के सामने नतमस्तक होकर प्रार्थना करने के लिए मजबूर कर देती है। यह चिंता निम्नांकित विचार से स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है - "हे प्रभु! इस बच्ची का सीधा हाथ-पैर आपने सही रखा जिससे आज वह इस योग्य तो है कि लिख-पढ़ सकती है। आज वह लड़खड़ाकर कुछ टेढ़ी होकर तो चलती है, परंतु बैसाखी के सहारे की आवश्यकता नहीं।"

उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि हर ऐसे बच्चे को शिक्षा में समस्या पैदा होती है जो शारीरिक व्यंग्य का शिकार हो चुका है। असामान्य बच्चों, दिव्यांग बच्चों को शिक्षा प्राप्त करते समय बौद्धिक स्तर की कमी हो या फिर शारीरिक व्यंग्यत्व हो समस्या निर्माण हो ही जाती है। अंधे, गुंगे, बहरे तथा हात पैरों का व्यंग्यत्व बच्चों में आत्मग्लानि, लज्जा, हीनभावना की समस्या निर्माण करता है। यही स्थिति वर्तमान काल में भी दिव्यांग बच्चों के लिए प्रासंगिक है। इसी प्रकार गतीमंद, मतिमंद या असामान्य बच्चों के साथ भी ऐसा ही होता है।

सुषमा अग्रवाल ऐसी स्थिति पर समाधान भी अपने उपन्यास के माध्यम से ही प्रस्तुत करती है। स्वाती की माँ

संगीता पोलियो से ग्रस्त बेटी को प्राप्त कर भगवान को कोसती नहीं अपितु उसके दाहिने हात पैर शाबुत रखने के लिए ईश्वर का आभार मानती है और अपनी बच्ची को लेकर अपने मन में हीनभावना कभी उभरने नहीं देती। साथ ही बेटी को भी प्रेरणा, आत्मविश्वास दे कर उससे हीनभावना दूर रखने का प्रयास करती है, यह ऊपर्युक्त कथन से स्पष्ट द्रष्टव्य है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

4) शिक्षा में बिघड़ी आर्थिक स्थिति एक समस्या एवं समाधान: पैसा वह चीज है वह जो हर व्यक्ति के पास आवश्यकता के अनुरूप हो तो जिंदगी चलती नहीं दौड़ती है। लेकिन उसकी कमी इन्सान के जीवन के हर पड़ाव तथा क्षेत्र पर असर डालती है। 'मन के जीते जीत' उपन्यास की नायिका स्वाती की सहेली खुशबू के परिवार के हालात बिगड़ गए हैं क्योंकि उसके पिता की मौत हो गई है। उसकी माँ पर घर की और पति के ऑफिस में मिली नौकरी की जिम्मेदारी पड़ गई है। जिसके चलते आसाम की कमी के कारण खुशबू की माँ भारती बिमार पड़ जाती है। इसके चलते दवाई पर हुए खर्च के कारण खुशबू स्कूल की फीज भी भर नहीं पाई है। साथ ही माँ की सेवा तथा घर के काम निपटाने की व्यस्तता के कारण उसकी पढ़ाई नहीं हो पा रही है। जो खुशबू के द्वारा स्वाती को कहे कथन से स्पष्ट दिखाई देता है - "स्वाति... मेरी मम्मी की तबियत बहुत खराब है। उन्हें पंद्रह दिनों से बुखार आ रहा है। बस इसी कारण मेरा पढ़ने में भी मन नहीं लग रहा है। घर जाकर थोड़ी देर मम्मी के हाथ-पैर दबा देती हूँ। मैं और मेरे देवांश भैया हम दोनों मिलकर ही घर का काम कर लेते हैं। जो कुछ बना लेते हैं, वही खा लेते हैं। अब तुम ही बताओ स्वाति कि मैं किस समय पढ़ूँ? कैसे पढ़ूँ?"⁵

उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि कमाने वाला ही बिमार पड़ जाता है तो घर की आर्थिक स्थिति चरमरा जाती है और



बच्चे छोटे हो तो उनपर घर के कामों की जिम्मेदारी आती है। जिसके चलते बच्चों का मन पढ़ाई में नहीं लग पाता तथा पढ़ाई उनसे छूट जा जाती है। यही स्थिति पूरे समाज में है। शिक्षा लेनेवाले छात्रों के जीवन में अर्थ की कमी एक अनसुलझी समस्या के रूप में सामने आती है। जिसके ह्यूह में फसा छात्र शिक्षा से दूर चला जाता है।

सुषमा अग्रवाल जी इसका समाधान नायिका स्वाती के माध्यम से प्रस्तुत करती है। नायिका स्वाती अपनी बचत की दो सो बारा रुपये की जमा पुँजी से सहेली की स्कूल की फीज जमा करती है। इससे स्पष्ट है कि एक छात्र दूसरे छात्र की एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की अपनी हैसियत के अनुसार मदद करता रहेगा तो शिक्षा से कोई भी छात्र अथवा छात्रा वंचित रहने से बच जाएंगे। जिससे शिक्षा में आती आर्थिक समस्या सुलझने में आसानी हो जाएगी ऐसा हम निसंदेह कह सकते हैं।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि काल कोई भी हो, मानव ने कितना भी विकास किया हो। शिक्षा लेते समय शिक्षा में मानसिक ताणतणाव, या चिंता शारीरिक अंगों की कमी, मानसिक दुर्बलता पारिवारिक माहौल, आर्थिक परिस्थिति,

लडकियों के विवाह को लेकर सामाजिक दृष्टिकोण हो या फिर पुरुष प्रधान समाज की पुरुषी मानसिकता लडकियों के शिक्षा में समस्या निर्माण करती ही है। उपन्यास की नायिका स्वाती समाज के अपंग महिलाओं का तो खुशबू तनदुरूस्त महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हुई शिक्षा लेते समय आती समस्याओं को यथार्थ रूप में सामने आती समस्याओं को खुद के माध्यम से सामने रखती है। जिसका समाधान सुषमा अग्रवाल स्वाती के माध्यम से प्रस्तुत करती है। लिहाजा यह कहना तर्कसंगत होगा कि ऊपरयुक्त सभी समस्याएँ आज भी शिक्षा में प्रासंगिक है जो शिक्षा की वास्तविकता तथा यथार्थता को बयां करती है। इसमें कोई दो राय नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- १) सुषमा अग्रवाल, ' मन के जीते जीत ' हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, प्रथम संस्करण 2012, पृ. क्र. 28
- २) वही पृ. क्र. 30-31
- ३) वही पृ. क्र. 20
- ४) वही पृ. क्र. 17
- ५) वही पृ. क्र. 34